International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 1; Issue 6; November 2016; Page No. 17-20

आजमगढ़ जिले के हाई स्कूल स्तर पर शैक्षिक तकनीकी प्रक्रिया का विद्यार्थियों के व्यवसायिक रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

[1] अरविन्द कुमार, [2] डॉ. जय सिंह

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
शोध रिपोर्ट के अनुसार सूचना व संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के सही इस्तेमाल से विषय–वस्तु और शैक्षणिक प्रविधि दोनों बुनियादी बदलाव किए जा सकते हैं और यही 21 वीं सदी में शैक्षणिक सुधारों के केंन्द्र में भी रहा है। यदि कायदे से इसी विकसित किया गया और लागू किया जाए, तो सूचना व संचार प्रौद्यागिकी (आईसीटी) समर्थित शिक्षण ज्ञान और दक्षता के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है जो आजीवन अध्ययन के लिए छात्रों को उत्पेरित करता रहेगा। शोध क्षेत्र में न्यादर्श में चयनित 55.66 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी समर्पित शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु शासन द्वारा सकारात्मक प्रयास किये जा रहे है। शोध क्षेत्र में 59.31 प्रतिशत इस बात से पूर्ण सहमत हैं कि शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

मूल शब्दः आजमगढ़ जिला, हाई स्कूल, शैक्षिक तकनीकी, विद्यार्थी, व्यवसायिक रुचि, अध्ययन

1. प्रस्तावना
शिक्षा मनुष्य को अज्ञात तत्वों से परिचित कराकर उसे अनेक जटिल रहस्यों को समझने के योग्य बनाती है। अर्थात उसे ज्ञानवान, चिंतक, विचारक तथा अभिव्यक्ति की क्षमता से युक्त बनाती है। शिक्षा मनुष्य के उन सभी नैतिक आदर्शों को स्थापित करने का कार्य करती है, जो उसे सही अर्थों में सामाजिक प्राणी के रूप में मान्य करने हेतु आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य को मानव के रूप में परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ही करती है।

भाषा, अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषा मानव जीवन का अभिन्न अंग है। सम्प्रेषण के द्वारा ही मनुष्य सूचनाओं का आदान प्रदान एवं उसे संग्रहित करता है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक अथवा राजनीतिक कारणों से विभिन्न मानवी समूहों का आपस में संपर्क बन जाता है। गत शताब्दी में सूचना और संपर्क के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति हुई है। इलेक्ट्रानिक माध्यम के फलस्वरूप विश्व का अधिकांश भाग जुड गया है। सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति ने ज्ञान के द्वारा खोल दिये है। बुद्धि एवं भाषा के मिलाप से सूचना प्रौद्योगिकी के सहारे आर्थिक संपन्नता की ओर भारत अग्रसर हो रहा है। इलेक्ट्रानिक वाणिज्य के रूप में ई–कॉमर्स, इंटरनेट द्वारा डाक भेजना, ई–मेंल द्वारा संभव हुआ है। ऑनलाईन सरकारी कामकाज विषयक ई–प्रशासन, ई–बैंकिग द्वारा बैंक व्यवहार ऑनलाईन, शिक्षा सामग्री के लिए ई–एज्यूकेशन आदि माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के बहु आयामी उपयोग के कारण विकास के नये द्वार खुल रहे हैं। भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहा है। इस क्षेत्र में विभिन्न प्रयोगों का अनुसंधान करके विकास की गति को बढ़ाया गया है। सूचना प्रौद्योगिकी में सूचना, आँकड़े (डेटा) तथा ज्ञान का आदान प्रदान मनुष्य जीवन के हर क्षेत्र में फैल गया है। हमारी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक तथा अन्य बहुत से क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास दिखाई पड़ता है। इलेक्ट्रानिक तथा डिजीटल उपकरणों की सहायता से इस क्षेत्र में निरंतर प्रयोग हो रहे हैं। आर्थिक उदारतावाद के इस दौर के वैश्विक ग्राम (ग्लोबल विलेज) की संकल्पना संचार प्रौद्योगिकी के कारण सफल हुई है। इस नये युग में ई–कॉमर्स, ई–मेडीसिन, ई–एज्यूकेशन, ई–गवर्नेंस, ई–बैंकिंग, ई–शॉपिंग आदि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का विकास हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी आज शक्ति एवं विकास का प्रतीक बनी है। कंम्प्यूटर युग के संचार साधनों में सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से हम सूचना समाज में प्रवेश कर रहे हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के इस अधिकतम देन के ज्ञान एवं इनका सार्थक उपयोग करते हुए, उनसे लाभान्वित होने की सभी को आवश्यकता है।

सूचना व संचार प्रौद्योगिकी उन कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता है जो इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सूचना के पोषण संग्रहण, निर्माण, प्रदर्शन या आदान–प्रदान में काम आते हैं। सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की इस व्यापक परिभाषा के तहत् रेडियों, टीवी, वीडियो, डीवीडी, टेलीफोन (लैंडलाइन और मोबाइल फोन दोनों ही), सैटेलाइट प्रणाली, कम्प्यूटर जैसे नेटवर्क हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर आदि सभी आते हैं, इसके अलावा इन प्रौद्योगिकी से जुड़ी हुई सेवाएँ और उपकरण, जैसे वीडियों कॉन्फ्रेसिंग, ई–मेल और ब्लॉग्स आदि भी आईसीटी के दायरे में आती है।

सूचना युग के शैक्षिक उद्देश्यों को साकार करने के लिए शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के आधुनिक रूपों को शामिल करने की आवश्यकता है। इसे प्रभावी तौर पर करने के लिए शिक्षा योजनाकारों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों को प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण वित्तीय, शैक्षणिक और बुनियादी ढांचागत आवश्यकताओं के क्षेत्र में बहुत से निर्णय लेने की आवश्यकता होगी। अधिकतर लोगों के लिए यह काम न सिर्फ एक नई भाषा सीखने के बराबर कठिन होगा, बल्कि उस भाषा में अध्यापन करने जैसा होगा।

2. अध्ययन की आवश्यकताः
शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित शोध कार्य न केवल आजमगढ़ जिले वरन्

सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश के शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के समस्त संदर्भो तक किया गया है। विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग, छात्रों के शैक्षिक तकनीकी से परिचय के प्रति अभिभावकों की जागरुकता एवं पक्षधरता, विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षा हेतु उपलब्ध कराये जा रहे संसाधनों, विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षा अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन किया गया है।

3. शोध की परिकल्पनायें

1. शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी समर्पित शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु शासन द्वारा सकारात्मक प्रयास किये जा रहे है।
2. शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

4. उद्देश्य

किसी भी अनुसन्धान में सर्वप्रथम किसी विशिष्ट समस्या तथा उसके उद्देश्यों को निर्धारित किया जाता है, जिसके पश्चात् समस्या को पहचान कर उसका शाब्दिक अर्थ स्पष्ट किया जाता है। इसके बाद अनुसन्धानकर्ता अपने विशिष्ट उद्देश्यों का प्रतिपादन करता है। उद्देश्यों का प्रत्यक्ष सम्बन्ध अनुसन्धान की क्षमता से होता है। अनुसन्धान के अध्ययन का प्रारूप विषिश्ट उद्देश्यों से विकसित करने में अत्यधिक सहायता मिलती है। अनुसन्धान अध्ययनों में इस प्रकार की परिकल्पनाओं का महत्व नहीं होता है क्योंकि यह एक प्रकार का अनुसन्धान अध्ययन होता है। शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित शोधकार्य के अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. शोध क्षेत्र के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग हेतु शासन द्वारा संचालित योजनाओं की उपादेयता एवं प्रभाव का अध्ययन करना।
2. क्षेत्र में इस शिक्षा के समक्ष आने वाली समस्याओं के अवरोधों का पता लगाना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

5.1 भौगोलिक परिसीमनः प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र जिला आजमगढ़ है। इसके अन्तर्गत 07 तहसील – बूढ़नपुर, सगड़ी, निजामाबाद, सदर, फूलपुर, लालगंज व मेंहनगर हैं। जिले के सभी तहसीलो से 5–5 विद्यालय कुल 35 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के समस्त संदर्भो तक किया गया है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तावित शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। प्रस्तावित अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया जाएगा –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधि – शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति में शैक्षिक तकनीकी की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्ष के रूप में चयनित हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 साक्षात्कार विधि – शोध क्षेत्र आजमगढ़ जिले में शैक्षिक तकनीकी की वर्तमान स्थिति की समीक्षा करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्राचार्य तथा अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। चूंकि आजमगढ़ जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नही है, इसलिए जिले के सभी तहसीलो से 5–5 विद्यालय कुल 35 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया।

शैक्षिक तकनीकी की वर्तमान स्थिति का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्ष के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 70 शिक्षक, विद्यालयों के प्राचार्य, 2–2 अभिभावक कुल 70 तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 700 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने हाई स्कूल स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – गौड़, प्रकाश (1999)[1], अग्रवाल (1999)[2], कल्पना (2004)[3], शर्मा (2004)[4], घनश्याम, गोयल (2005)[5], सनसनवाल, डी.एन. (2001)[6].

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जनपद आजमगढ़ भौगोलिक दृष्टि से आजमगढ़ मण्डल के अन्तर्गत 42.40 डिग्री से 43.52 डिग्री पूर्वी देशान्तर तथा 25.17 डिग्री से 26. 17 डिग्री उत्तरी मध्य अक्षांश पर गोमती नदी तथा घाघरा नदी के बीच का भू–भाग है। जिसमें मुख्यतः तमसा नदी बहती है। प्राचीनकाल में यह भू–क्षेत्र घने जंगलों से घिरा था अतएव एकांत एवं पवित्र स्थली मानकर वैदिक युग में तमाम महाऋषियों ने इसे अपनी साधना स्थली बनाया था। उस युग में यह क्षेत्र शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बन गया था। राजा आजमशाह के नाम पर इस जनपद का वर्तमान नाम आजमगढ़ पड़ा।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक 01: "शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी समर्पित शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु शासन द्वारा सकारात्मक प्रयास किये जा रहे है।"

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी समर्पित शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु शासन द्वारा सकारात्मक प्रयास का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी समर्पित शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु शासन द्वारा सकारात्मक प्रयास किये जा रहे है, के सम्बन्ध में अभिमत			
			सहमत		असहमत	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	35	24	68.57	11	31.43
2.	शिक्षक	70	46	65.71	24	34.29
3.	अभिभावक	70	45	64.29	25	35.71
4.	छात्र	700	372	53.14	328	46.86
योग		875	487	55.66	388	44.34

उपरोक्त सारणी क्र. 1 में संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि न्यादर्श में चयनित 55.66 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी समर्पित शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु शासन द्वारा सकारात्मक प्रयास किये जा रहे है, जबकि 44.34 प्रतिशत छात्र इस बात से असहमत हैं कि शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी समर्पित शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु शासन द्वारा सकारात्मक प्रयास नही किये जा रहे है। शोध क्षेत्र में 68.57 प्रतिशत प्राचार्य, 65.71 प्रतिशत शिक्षक, 64.29 प्रतिशत अभिभावक व 53.14 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी समर्पित शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु शासन द्वारा सकारात्मक प्रयास किये जा रहे है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

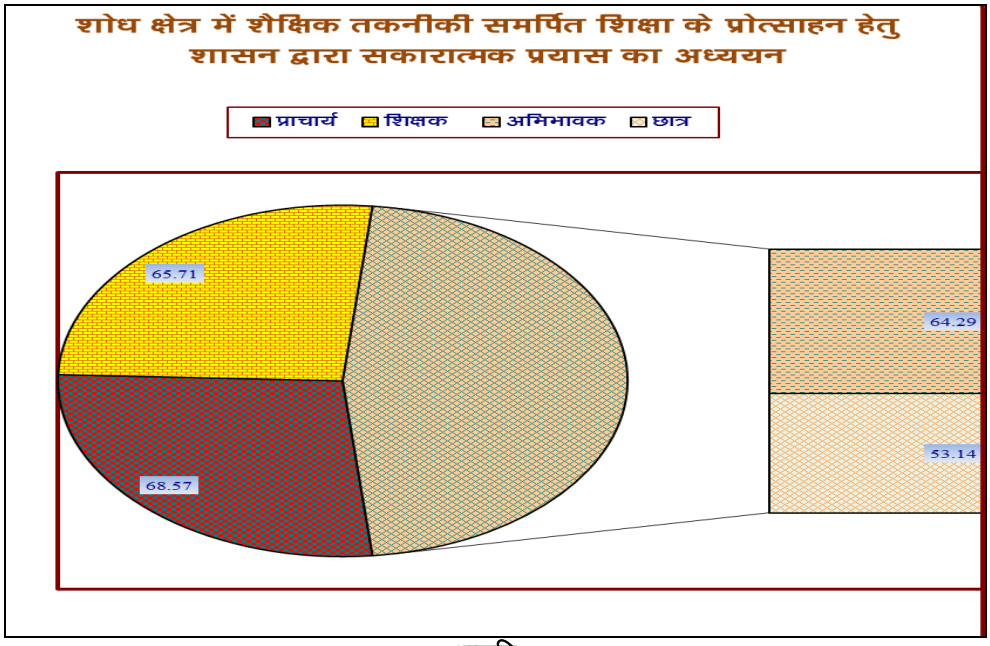

आकृति 1

परिकल्पना कमांक – 02 ''शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।"

सारणी क्रमांक 2: शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में सकारात्मक प्रभाव			
			पड़ रहा है		नही पड़ रहा है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	35	22	62.86	13	37.14
2.	शिक्षक	70	37	52.86	33	47.14
3.	अभिभावक	70	39	55.71	31	44.29
4.	छात्र	700	421	60.14	279	39.86
योग		875	519	59.31	356	40.69

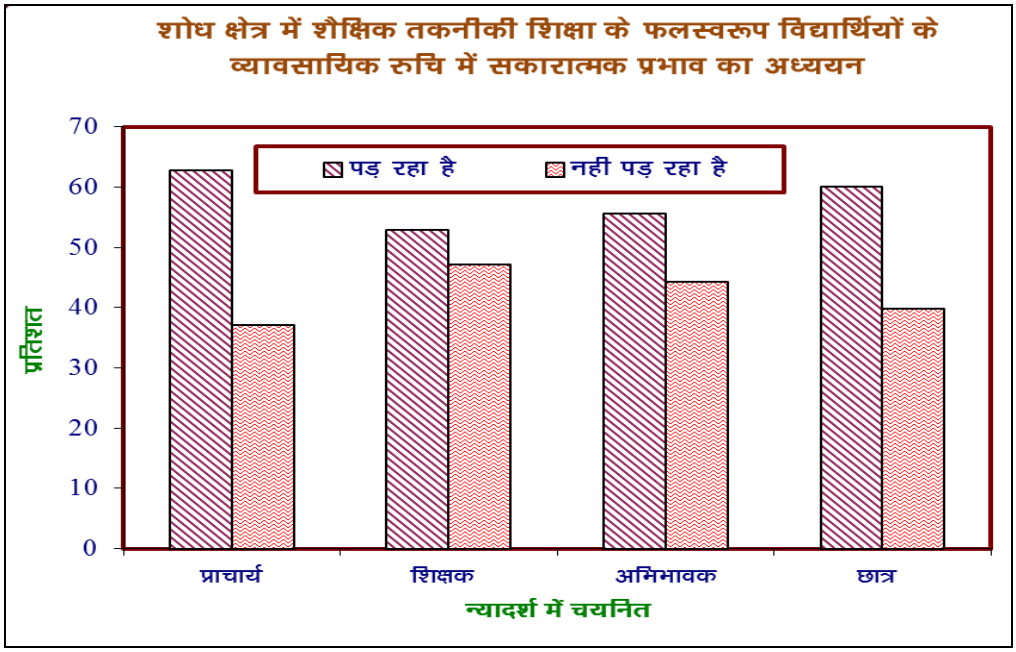

आकृति 2

उपरोक्त सारणी क्र. 2 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक तहसील से न्यादर्श में चयनित छात्रों से शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, के सम्बन्ध में प्रष्नावली पत्रक के आधार पर तथ्य संकलित किये गये हैं। संकलित तथ्य प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है।

सारणी कमांक 2 मे संकलित प्रदत्तों के अध्ययन से स्पष्ट है कि 62.86 प्रतिशत प्राचार्य, 52.86 प्रतिशत शिक्षक, 55.71 प्रतिशत अभिभावक व 60.14 प्रतिशत छात्र यह मानते है कि शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

सारणी कमांक 2 मे संकलित प्रदत्तों के अध्ययन से स्पष्ट है कि 59.31 प्रतिशत इस बात से पूर्ण सहमत हैं कि शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है तथा 40.69 प्रतिशत यह मानते हैं कि शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि न्यादर्श में चयनित 55.66 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी समर्पित शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु शासन द्वारा सकारात्मक प्रयास किये जा रहे है। शोध क्षेत्र में 59.31 प्रतिशत इस बात से पूर्ण सहमत हैं कि शोध क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

12. संदर्भ

1. गौड़, प्रकाश : कम्प्यूटर अनुप्रयोग, रोजगार और नये आयाम, रोजगार और निर्माण, 14 अक्टूबर 1999.
2. अग्रवाल, अनिल : भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी , मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005.
3. कल्पना, राजाराम : भारत में विज्ञान प्रौद्योगिकी : स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि. जनकपुरी, नई दिल्ली, 2004.
4. शर्मा, ओ.पी. : ग्रामीण क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी, प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल 2004.
5. घनश्याम, गोयल : एजुसेट–अन्तराल का पुल, रोजगार समाचार, 8–14. जनवरी 2005.
6. सनसनवाल, डी.एन. : सूचना प्रौद्योगिकी और उच्च षिक्षा, रोजगार समाचार, 14–20 अप्रैल 2001.